

धर्मसूत्र वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-45

॥ वज्रसूत्र ॥

ॐ नमो श्रीवत्सलाय ॥ **॥ वत्सल वाच ॥** नीनें ॐ न निनाका न
भुंन्य २ महाभुंन्य ॥ निनापंस्व ॥ निनाका न ॥ अमृति ॥ गत्वनहि पृथिवी
मम वत्सल वत्सल ॥ सिना ॥ वत्सल ॥ स्वर्ग वयं ॥ गत्वा पादस्तु न ॥
कुमर्यसेलु ॥ ॥ वत्सल गत्तदवी ॥ ह्यामत्र मिता शुरु ॥ वत्सल व
कोपाय ॥ घंघु प्रह्लाद गति ॥ गत्वा वत्सल नमिना ॥ वाममुख अमिता

॥ अत्मा हृदय जात ॥ नत्वा नागो अभाघ पाद ॥ ललातस्य वलाच
न ॥ दहिन नत्वा संस्रुव ॥ पक्ति मस्य अमिता ॥ वामस्य अभाघ सिद्धि
वलाच नमहा श्री गति ॥ शुक्र वर्जु महा जात ॥ स्वतपी तत्र कस्यामच
गुवका हवंकु ह ॥ ॥ पद्म गुप्त वजा चार्य ॥ वत्सल घंघु धन शुरु प
ह्या ह्याना समा लिंग ॥ सर्व कथा गगत्वा ॥ नामा हव ॥ गगन गंऊ

की
जीगरेचकुदय॥कर्कशलेववकुपालीश्रुकायांकुलाकस्व॥म
नात्मकमंजरी॥कायसर्वनीवर्तुविषैकी॥स्वामजायतम
गीयं॥वीजस्यसमंरुतद॥रुतदहिलरुमांरुका॥वामरुतअप
नाजिगा॥मुखद्वयमीवाय॥गुच्छश्चमृतकंदरी॥अचलदहिलवा
हू॥वामवाहूकीनाऊ॥नीलदंष्ट्रदहिनजावू॥वामजावूम

हावल॥उर्द्धाक्षीखचक्रवर्ति॥स्वर्गस्यरूपनमम॥अध्वगुसंरु
नाऊल॥पागालसंस्थिताश्रुहं॥ १५ ॥ श्रीप्रह्लापात्रमितावाच
चतुर्दवीसमूहवनामकस्वतुवंत्रागा॥आकाशघंलमंलुलः॥
माहवर्गिलाचनादवी॥द्वयत्रगिमामकीदवी॥नागत्रगि॥पांलुना
दवी॥दवीतावावऊत्रगि॥पृथिवीलाचनाऊता॥आपध्वगुमाम

कीदवी॥ नरुपांलुनाहवधुव॥ वायुगनापकिर्किता॥ १७ ॥ श्री
वऊसखावाच॥ विस्ववऊरविस्थाप॥ चतुदीगवऊषुची॥ आका
षगगलगंक॥ मध्यरुअऊाखमम॥ नरुपूर्ववेलाचन॥ दकिल
नतसंम्व॥ पकिमधुअमिताह॥ उरुनददूरिस्वन॥ अग्नकान
स्थलाचना॥ नेम्यकानदवीमामकी॥ वायुयपांलुनादवी ॐ

३

आर्यगना॥
अनदवीआर्या॥ ॐगीगर्हमंलुल॥ १८ ॥ अग्ननृपवऊाधु॥ नेम
त्यसद्ववऊा॥ वायुयायां गंधवऊा॥ ॐअनस्यनमवऊा॥ १९ ॥ पूर्व
वाक्पगिकायां॥ मेदीयकिर्किगर्ह॥ दकिलस्थपगिकायां॥ वऊपाली
खगर्हय॥ २० ॥ पकिमस्थपगिकायां॥ लाक्खनमंअरुधीयं॥ सर्व
लीवर्कुविक्कंम्ही॥ समंरुहदस्य उरुन॥ २१ ॥ पूर्वदानयन्मांकक

दक्षिणदिक्प्रह्लांकक॥ पश्चिमदिक्प्रह्लांकक॥ उत्तरदिक्प्रह्लांकक
॥ २२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ काशिकायाः ॥ नेत्रकाशिकायाः
नीलदंष्ट्र॥ वायुकाशिकायाः महाबला॥ उदरकाशिकायाः फा॥ २३ ॥ दीर्घावि
दीर्घाविनासायाः ॥ एवं तु पृथिवी मध्यलं हवंतु वज्रकवचा॥ २४ ॥ श्री
पद्मा देवी वाच॥ पद्मगुणवत् सत्त्वपिणा॥ सर्वतथागत॥ तदात्मिन

ननापि उपनिषे मानूषाना॥ २५ ॥ श्रीवठसुखवाच॥ समं तु
 तदुनिर्वीनं च॥ तगवतसाकसिंह॥ तदुनिर्वीनसत्रीनं उत्पतिने
 चतुर्वर्ग॥ २६ ॥ अकसिलसिनिर्वीनं च॥ वजाचार्यहि॥ वंशवा
 च॥ अकिमुखवाहनप॥ वस्यददिनाहो॥ २७ ॥ अससूदजा
 नूपाद॥ वज्रअधिसूनात्यगि॥ नकमानस॥ नानाअंकु॥ नानापंडि

पिपिलिका॥ २८ ॥ ॐ गिसमं कुरु सर्वत्र सत्रीं व्यापित॥ नृवंशीः
लाक्षस्वनलाकं सर्वत्र॥ परिपालिता॥ पापनासि पंचमार्ग॥ शुन्य
पुष्टापात्रमिता॥ २९ ॥ श्रीपुष्टापात्रमिता देवावाच॥ अयं देव॥ व
रुसंत्वं॥ दिनत्रागिकथं पुष्ट॥ नृपुष्टाकननं कुरु॥ कुरु देवपनाकम
॥ ३० ॥ श्रीवरुसंत्वं वाच॥ श्रीलाक्षस्वनपनाकमललागधमह

स्वन॥ चक्रद्वयनचंद्रसूर्य॥ दंरुशूकासनस्वनि॥ ३१ ॥ मास्व
नरुवमहावायु॥ मयधर्ममधूनवाच॥ दयावाहस्वंधवंश
नदयनानायन॥ ३२ ॥ उदयनगनपर्वत॥ नरुहनेपाखा
नेच॥ नरुचसागनसमृद्ध॥ पादाख्यां पृथिमं गुल॥ ३३ ॥ रुकु
दहिलं॥ रुकुनाका॥ वामरुकुकुमनाका॥ दहिनानूवयूना

नाग॥ वामजानू कथयस्मथा॥ ३४ ॥ तस्य दवलाक नाथ प्राक
मेहाखतमम॥ दिननातिप्रलाकारी॥ मदाथीनवऊपदं॥ ३५ ॥
दवीषीप्रह्लापात्रमितावाच॥ ननुमानुषानांचतुवर्ग कर्मक
स्ययापात्रं च स्नानदानात्री नित्यकर्म कथंकस्यवऊसत्वा॥ ३६
भीमरात्रवाच॥ दवऊगा ~~वडावाच्य~~ वडावाच्य संगस्नाननित्यक

६

र्म॥ वऊजातिहिकुनांच॥ धर्मधनुकर्मसह॥ ३७ ॥ ऊगीनांच
वस्यानांच॥ दानंदयाग॥ महाबलि वनिऊंकर्मवेस्यधु॥ सुदस्या
कृत्तिकर्मक॥ **ॐ गीषीसहात्राखितं॥** ननुदवीसमनल
च धनलाहाह विष्यति॥ सर्वपाप सर्वदुखे॥ सर्वदानिदुमान
न॥ ३८ ॥ **कार्यालक्ष्मीगृहऊगं॥** पूज्योगादिस्तिनाहव॥ ऊन

वांचन॥ तनै संवाफय भुतं॥ ॐ ती श्री भुन्य निनें ॐ न वरुं सत्वका
यस्य तिरुवल उत्यति समाफे॥ ४० ॥ ॐ नभा श्री वरुं सत्वाय वं
द श्री वरुं सत्व॥ यद्य गुन वरुं चार्थ॥ वरुं घं धुधन॥ निर्मा नका
य॥ धर्म काय भुतं॥ १ ॥ ॐ का न वेला च॥ सिलसि॥ नृप स्कं
धु क जाति वर्तु॥ आ का न नृ मृ गा ह॥ मृ गो ल व॥ संज्ञा न स्कंध

नका वर्तु॥ २ ॥ दय हं का॥ अकार्य विज्ञान स्कंध कृष्ण वर्तु॥ नाह
स्वा का न॥ नल संमृ व दय ना स्कंध पीत वर्तु॥ ३ ॥ याद या हा का
न नृ मा घ सिद्धि॥ सस्का न स्कंध स्या म वर्तु॥ माह र गिला च ना पृथि
धु ख न गि सा म की आय धा तु॥ ॥ नाग न गि पां द ना न क धा तु
वरुं न गि ना ना वा य धा तु॥ ख न त्वं उ व ना वा य पा न न त्वं प क ल्य यः

॥ ५ ॥ **ॐ** कानगगलंगं **॥** ध्यानाय नमः **॥** हां कां कीं तीं गर्हं च **॥** यगन **॥** यां कां नवकुपाली **॥** यगन **॥** जीं कां नला **॥** स्वयंः
युक्ताय नमः **॥** ६ ॥ खं कां नमं ईं रं श्रीं मन आय नमः **॥** सर्वनी वं कु
विस्वं म्मीं कायाय नमः **॥** मेरीय स्वासाय नमः **॥** समं तु हं दवीं जाय
नमः **॥** ७ ॥ **ॐ** स्वीं नमं तु हं **॥** सर्वलां स्वयं नमः **॥** वीं नमः स्वयं नमः

उवस्वं ध्यात्वा **॥** मंगलं विष्णु नमः **॥** मायं नमः **॥** दिग्दहं कानात **॥** ८
पून **॥** श्रीं वं नमः **॥** समवकुं कायाय नमः **॥** दहिनं हं वं नमः
नीं **॥** वामं हं वं नमः **॥** मूरं हं वं नमः **॥** ९
दहिलं वाहं विस्ववति **॥** वामं वाहं विस्ववत् **॥** दहिनं जानू विस्वपद्मा
वामं जानू विस्वकर्मा **॥** १० **॥** मूर्ध्नी गगलं **॥** वतिं द्विपादं पृथि

धननीदवी लाचनासखनाग चतुवास्तु ॥ ॐ तिष्ठी मावंधविषष्टी
वलाचन ककुब्ध अजात्य कनकसूनि नलसंस्कृतसिखि
जिन अमिताह विस्वरूप अमाद्यसिद्धि कास्यपक्षी वंज सत्वना
कसिंह समंकरदुता सफरगथागत ॥ १३ ॥ उंका नसिलसि
आका नमुख ॥ हंका नहदय ॥ स्वाका न नाहो ॥ हाका न पाद ॥ पंचा ॥

ऊनमंदु ॥ श्रीवज्रसत्वपलमाम्यहं ॥ १४ ॥ अजात्यवज्रमहाह्वा
न ॥ वज्रधातु महावृध ॥ तिमंजुल त्रिवजाग ॥ लाखगुप्त नमास्तुत
॥ १५ ॥ विलाचनमहाधुव ॥ वज्रसां क महायत ॥ प्रकृतिपलास्यना
गम्यः दणवज्र नमास्तुत ॥ १६ ॥ नलानाजसूगं हिर्य ॥ खवजा
काजनिर्मल ॥ स्वलावधुवनिलख ॥ कायवज्र नमस्तुत ॥ १७ ॥

वज्रा मिताहमहा नाऊ॥ निर्विकल्प खवऊधृक॥ जागपात्रमितां प्रा
फा॥ लाखवऊनमास्तुत॥ १८ ॥ अमाचवऊसंवृध॥ सर्वासापनिपू
नक॥ शुद्धस्वतावसंरुक्कं॥ वऊमन्वनमास्तुत॥ स्वर्गमत्यपागात्रच
धर्माधरुस्वतावक॥ सर्वगथागतव्याफं॥ वऊधरुपुतावक॥ २०
॥ विपश्चीककृच्छं॥ कनकसिरि॥ विस्वरुव॥ कास्यप॥ साकसिं

१९

हृवंदसफगतथागत॥ २१ ॥ गताद्वानाममाऊ॥ कायव्याफमना
तावयत॥ कल्यानेचवऊसत्वकं॥ वऊस्वताव॥ वजाचार्यवऊस्वता
वधनपुता॥ २२ ॥ सर्वनाग॥ सर्वव्याधि॥ सर्वकृच्छं॥ नामनं॥ धनः
पुतायालुक्की॥ सर्वदुपनिपूत्रयत॥ २३ ॥ वृंतिणीवऊसत्व
कायस्य॥ तथागतज्ञाताव्याफसतसमाफं॥ ॥ ऊधर्मावा

यादित

II-45 धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

११